// सत्यनाम //

परिचय–पत्रक

भारतीय संत परंपरा में सद्गुरू कबीर साहेब का स्थान अन्यतम है। वे अध्यात्म–जगत के ऐसे देदीप्यामान सितारें हैं, जो अध्यात्म प्रेमी जिज्ञासु जनमानस को अपनी ओर सहज ही आकर्शित करते हैं। जो ज्ञान का पिपासु है, जो सत्यान्वेशी साधक है, वह सद्गुरू के जीवनदायी सन्देषों की अमृत–वारि का पान किये बिना तृप्त नहीं हो सकता है।

सद्गुरू कबीर साहेब को देखने का दृश्टिकोण भिन्न–भिन्न रहा है। इसलिए उनका व्यक्तित्व लोगों को भिन्न–भिन्न नजर आता है। कवि ने काव्य की दृश्टि से देखा तो वे महान रहस्यवादी कवि नजर आये। दार्षनिक और विचारक उनकी वाणियों में जीव, जगत् और ब्रह्म के पारस्परिक संबंधो की उलझन में समाधान पाते हैं। इसी प्रकार कोई उन्हें समाज सुधारक कहता है, कोई योगी, तो कोई उन्हें फक्कड़ सन्त के रूप में देखता है। किन्तु ज्ञान के पिपासु, षान्ति पद के अन्वेशक साधक–भक्तों का एक बड़ा समूह भी है जो उसे पूर्ण ब्रह्म, सत्यपुरूश परमात्मा, समर्थ सद्गुरू और अपने परम आराध्य के रूप में मानता है और उसकी उपासना एवं पूजा करता है। उन्हीं आस्थावान भक्त सेवकों का वर्ग हव कबीरपंथी के नाम से जाना जाता है जो पूरी दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाये हुये हैं।

कबीर पंथ एवं धर्मदास साहेब

सद्गुरू कबीर साहेब ने किसी मत–पंथ की स्थापना नहीं की थी – यह एक सर्वमान्य धारणा है। उनके परम षिश्य धर्मदास जी साहेब हुये, जिन्होंने सद्गुरू के अनुयायियों के खान–पान, रहन–सहन, आचान–विचार एवं जीवन संस्कारों को व्यवस्थित रूप देने हेतु कबीर पंथ का निर्माण किया। आज भी कबीर पंथ का तीन चौथाई भाग धर्मदास साहेब की परम्परा के मानने वालों का है।

कहते हैं कि धर्मदास साहेब बांधव गढ़ के नगरश्रेश्ठि थे। तब उनके पास 56 करोड़ की संपदा थी किन्तु पंथ के विकास और विस्तार के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। वे सद्गुरू के अत्यन्त कृपापात्र सेवक थे। सद्गुरू ने उन्हें जीवों के कल्याण के लिए बयालिस वंष की स्थापना का आदेष और आषीर्वाद दिया था–''तुमसे बयालिस वंष चलेंगे। वे वंष गुरू जीवों के कल्याण के लिए मेरी षिक्षा और उपदेषों का प्रचार करेंगे।'' तद्नुसार प्रथम आचार्य हुये पंथ श्री हजूर मुक्तामणिनाम (चूरामणिनाम) साहेब। तेरहवीं पीढ़ी में पंथ श्री दयानाम साहेब के कोई उत्तराधिकारी नहीं होने के कारण पंथ के विद्वान, सन्त, महन्तों एवं भक्त–सेवकों ने नादवंष आचार्यगद्दी की स्थापना सन् 1933 में धर्मस्थान खरसिया में की। इस तरह चौदहवीं पीढ़ी से नादवंष परम्परा अर्थात् गुरू–षिश्य परम्परा की षुरूआत हुई। पंथ श्री हजूर ग्रन्थमणिनाम साहेब चौदहवें नादवंष आचार्य गुरू के रूप में प्रतिश्ठित किये गये। उनके बाद पंथ श्री हजूर प्रकाषमणिनाम साहेब, पंथ श्री हजूर उदितनाम साहेब तथा पंथ श्री मुकुन्दमणिनाम साहेब हुये। वर्तमान में पंथ श्री हजूर अर्धनाम साहेब हैं।

धर्मदासीय नादवंष आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया

वर्तमान में कबीर पंथ की सबसे बड़ी आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया है। कबीर पंथ समाज का बहुत बड़ा भाग आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया से जुड़ा हुआ है। भारत के अलावा विदेषों में– मारिषस, फीजी, केन्या, हालैण्ड, सूरीनाम, इग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण आफ्रीका, पाकिस्तान, बंग्लादेष, नेपाल आदि देषों में केवल आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया के ही भक्त सेवक तथा महंत साहेब हैं। गुजरात (भारत) में प्रायः सभी बड़े स्थान आचार्यगद्दी खरसिया से ही सम्बंधित हैं। पूरी दुनिया में आचार्यगद्दी खरसिया से जुड़े लगभग 2000 महंत साहेब एवं 50 लाख कबीर पंथी भक्त सेवक हैं।

संस्था का उदे्ष्य

आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया का मुख्य उदे्ष्य है सद्गुरू की षिक्षा एवं उवदेषों को आम जन मानस तक पहुंचाना। उन्हें सात्विक और सदाचारी बनाना। समस्त व्यसनों एवं बुराइयों से मुक्त स्वस्थ और पवित्र जीवन–निर्माण हेतु प्रेरित करना। सरकारी सुधार गृहों में संबंधित व्यक्ति या समूह को अच्छे जीवन के लिए प्रेरित करना। अस्पताल, विद्यालय, वृद्धाश्रम, गौषाला आदि के द्वारा जनहित कार्यों में सरकार की सहभागिता। सद्गुरू के उपदेषों के प्रचार के लिए आश्रमों एवं मंदिरों की स्थापना। संबंधित आश्रमों के संचालन हेतु बाल्यावस्था से ही बच्चों को आश्रमीय परिवेष में रखकर आध्यात्मिक एवं विष्वविद्यालयीन षिक्षा देकर योग्य विद्वान सन्त का निर्माण करना। प्राकृतिक आपदा के समय संस्था के कार सेवकों द्वारा राहत कार्यों में सहयोग पहुॅचाना आदि।

सद्गुरू कबीर प्राकट्य धाम लहरतारा

यह सर्वविदित है कि सद्गुरू कबीर साहेब का प्राकट्य काषी के लहरतारा सरोवर में विक्रम संवत् 1456 में ज्येश्ठ सुदी पूर्णिमा के दिन हुआ था। उसी स्थान पर पंथ के सोलहवें आचार्य पंथ श्री हजूर उदितनाम साहेब ने एक भव्य प्राकट्य धाम स्मारक का निर्माण करवाया है। पंथ श्री हजूर उदितनाम साहेब महान तपस्वी, योगी एवं दृढ़ इच्छाषक्ति संपन्न कर्मठ महापुरूश थे। प्राकट्य धाम स्मारक का निर्माण करके पंथ श्री हजूर उदितनाम साहेब ने आम कबीर पंथी के स्वाभिमान और गौरव को ऊंचा उठाने का कार्य किया। उन्होंने इसे कबीरपंथियों का एकमात्र पवित्रतम तीर्थ स्थान के रूप में विकसित किया।

पंथ श्री हजूर अर्धनाम साहेब (वर्तमान)

संस्था में आचार्य पद सबसे बड़ा एवं सबसे प्रमुख संवैधानिक पद है। जिसका चयन संस्था के ट्रस्टी गण करते हैं। कबीर पंथ के प्रमुख के रूप में उन्हें सम्मान और प्रतिशठा मिलती है। संस्था के सभी कार्यों में उनका निर्णय अन्तिम माना जाता है।

वर्तमान आचार्य पंथ श्री हजूर अर्धनाम साहेब धीर–गंभीर एवं युवा चिन्तन वाले दूरदर्षी महापुरूश है। पंथ श्री हजूर मुकुन्दमणिनाम साहेब के अचानक सत्लोक गमन के पष्चात् उन्हें अठारहवें आचार्य के रूप में पंथ के नेतृत्व की बागडोर सौंपी गई है।

धर्माधिकारी सुधाकर दास षास्त्री

संस्था में (आचार्यगद्दी कबीर धर्मस्थान खरसिया) धर्माधिकारी साहेब का पद पंथ श्री हजूर साहेब के बाद दूसरा बड़ा संवैधानिक पद है। जिसका चयन पंथ श्री की सहमति से संस्था के सभी ट्रस्टी गण करते हैं। इसकी तुलना उपआचार्य, उपप्रमुख या प्रधानमंत्री के रूप में की जा सकती है। धर्माधिकारी का प्रधान कर्तव्य संस्था के धार्मिक एवं प्रषासनिक कार्यों में पंथ श्री का सहयोग करना है। पंथ श्री के अनुपस्थिति में वे ही संस्था के कार्यों का संचालन करते हैं।

धर्माधिकारी के रूप में सुधाकर साहेब षास्त्री की पद–प्रतिशठा 16 फरवरी 2008 को की गई थी। धर्माधिकारी साहेब पंथ के युवा विद्वान महापुरूश हैं। अपनी नियुक्ति के बाद से ही लगातार भारत के कोने–कोने में जाकर सद्गुरू के अमर संदेषों को जन–जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास कर रहे हैं। विभिन्न बड़े–बड़े सम्मेलनों में अपने ओजस्वी और सारगर्भित उद्बोधन एवं स्वस्थ चिन्तन के द्वारा लोगों में पंथ की समुचित विकास की उम्मीद जगाई है। अपने मृदु एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार से लोगों के हृदय में आपने अमित छाप छोड़ी है। छोटे–से–छोटे एवं बड़े–से–बड़े के प्रति प्रेम एवं आदर का भाव आपकी सबसे बड़ी विषेशता है।

संन्यास

धर्माधिकारी साहेब ने सन् 1981 में 12 वर्श की उम्र में तत्कालीन आचार्य पंथ श्री हजूर उदितनाम साहेब से संन्यास की दीक्षा प्राप्त की थी। अपनी सेवा–भक्ति और नम्रता से पंथ श्री हजूर साहेब के अत्यन्त कृपापात्र होने के कारण उन्हें सौभाग्य मिला था। छोटी सी उम्र में पंथ श्री ने उन्हें बड़ी जिम्मेदारियां देना षुरू कर दिये थे। ग्रेजुएषन करते–करते वे आश्रम के प्रबन्धक बना दिये गये। और उन्हीं के कृपा से वे धर्माधिकारी के रूप में प्रतिश्ठित हैं।

योग्यता

श्री धर्माधिकारी साहेब प्राथमिक विद्यालय से लेकर विष्वविद्यालयीन षिक्षा वाराणसी (काषी) में पूरी की। 'साहित्य' विशय में आपने आचार्य ;च्वेज हतंकनंजपवदद्ध तथा षिक्षा षास्त्री ;ठण्मकण्द्ध की उपाधि ग्रहण की है। चैण् क् में नामिनेषन के एक साल बाद ही धर्माधिकारी बनाये जाने के कारण चैण् क् पूरी नही कर पाये। आप संस्था से प्रकाषित त्रैमासिक पत्रिका के सहसंपादक ;ब्व. मकपजवतद्ध भी हैं। पत्रिका प्रकाषन के प्रारंभ से ही आप अपने कठोर परिश्रम से इसे स्तरीय और सम्पूर्ण पत्रिका का दर्जा दिलाया है।

प्रथम विदेष यात्रा

वर्तमान मारिषस यात्रा धर्माधिकारी साहेब की पहली विदेष यात्रा है। इसके लिए मारिषस निवासी सभी कबीर पंथी भक्त हंस जन आदरणीय सभी महंत साहेबान तथा मारिषस सरकार धन्यवाद के पात्र हैं। जिन्होंने यह अवसर दिया। सभी के प्रति हम अपनी संस्था की ओर से आभार व्यक्त करते हैं। धन्यवाद!

इति षुभम्

प्रस्तुतिः डॉ0 रोहित दास षास्त्री